अध्ययन सामग्री :—

विषय - हिन्दी
वर्ग - स्नातकोत्तर
सेमेस्टर - II
प्रश्नपत्र - V

सुमन कुमारी
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
हरप्रसाद दास जैन महाविद्यालय
आरा

'आत्मकथा'

आत्मकथा का शाब्दिक अर्थ है – अपनी कहानी। इसमें लेखक अपने जीवन का सिंहावलोकन स्वयं करता है। (अर्थात् जो अपने बारे में स्वयं अपनी कहानी को लिखते हैं, वही आत्मकथा है।) इसमें स्मृति के आधार पर लेखक अपने जीवन की विभिन्न घटनाओं एवं अनुभवों का क्रमिक वर्णन प्रस्तुत करता है। स्मृति के आधार पर लिखी जाने के कारण यह विधा एक ओर संस्मरण के निकट दिखाई देती है तो दूसरी ओर वैयक्तिक घटनाओं के वर्णन के कारण डायरी के समीप जा पहुंचती है। आत्मचरित और आत्मचरित्र हिन्दी में आत्मकथा के अर्थ में प्रयुक्त होने वाले आरंभिक शब्द हैं। तत्वतः इनमें अन्तर नहीं है। आत्मचरित कही जाने वाली रचना में विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति और विवेक का भाव स्पष्ट रूप में विद्यमान रहता है। आत्मकथा इससे अधिक रोचक होती है।

आत्मकथा के लिखने का निश्चय ही दो उद्देश्य होते हैं। एक तो आत्म-निरीक्षण करना तथा अतीत की स्मृतियों को कुरेदने का मोह होना तथा दूसरा यह आकांक्षा होना कि मेरे अनुभवों का लाभ लोग भी उठा सकें। कभी-कभी आत्मकथा लिखने के मूल में ख्याति पाने की लालसा भी काम करती है। कलात्मक अभिव्यक्ति की प्रेरणा से भी आत्मकथा लिखी जा सकती है। ~~साहित्य~~ की यह विधा। विभिन्न ~~रूपों~~

बनारसीदास की 'अर्धकथा' (१६४१ई०) हिन्दी की प्रथम आत्मकथा मानी गई है। यह पद्य में लिखित है।

आधुनिक युग में हिन्दी गद्य का विकास होने पर अन्य विधाओं के साथ ही आत्मकथा की ओर भी लेखकों का ध्यान गया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कुछ आप बीती, कुछ जगबीती, के नाम से आत्मकथा लिखनी शुरू की। अपने यौवन काल के वातावरण और मुफ्तखोर मुसाहिबों का उन्होंने इसमें रोचक चित्रण किया है।

कुछ आत्मकथायें राजनीतिक एवं सामाजिक नेताओं द्वारा भी लिखी गई हैं। परन्तु उनमें साहित्यिकता का अभाव है। इसलिए वे साहित्यिक विधा की कोटि में नहीं आ सकती। बाबू श्यामसुन्दर दास ने 'मेरी आत्म कहानी' नाम से अपनी आत्मकथा लिखी। इसे हिन्दी की प्रथम महत्वपूर्ण साहित्यिक आत्मकथा होने का गौरव प्राप्त है, किन्तु इसमें कुछ कमियाँ हैं। डॉ० कमलेश के शब्दों में —" आत्मकथा में जिस आत्मनिरीक्षण और सरलता की आवश्यकता होती है, उसका इसमें इस आत्मकथा में सर्वथा अभाव है।"

आत्मकथा के क्षेत्र में हरिवंशराय बच्चन का अमूल्य योगदान है। उन्होंने तीन खण्डों में अपनी जीवन-कहानी लिखी है। प्रथम भाग 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ?', दूसरा भाग 'नीड़ का निर्माण', तथा तीसरा भाग 'बसेरे से दूर' है। बच्चन जी ने इसे बहुत ही निष्ठा व ईमानदारी से लिखा है। डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में — " बच्चन जी को हिन्दी गद्य को पुष्ट करने के लिये कुछ और गद्य की पुस्तकें लिखनी थीं।"

बच्चन की तीन खण्डों में प्रस्तुत आत्मकथा की विशेषता है उसकी तटस्थता, तरल संवेदना और ईमानदारी। निश्चय ही उनकी आत्मकथा का प्रथम खण्ड सर्वाधिक भावुकता - स्नात है।

इससे स्पष्ट होता है कि हिन्दी में आत्मकथाएँ कम नहीं लिखी गई हैं। किन्तु फिर भी इस विधा का उतना व्यापक लेखन नहीं मिलता। जैसा मिलना चाहिए था। कारण यह कि बहुत से साहित्यकार स्वयं अपने बारे में लिखने में संकोच करते हैं। फिर भी हिन्दी में राजनीति के क्षेत्र के महापुरुषों की आत्मकथाएँ और साहित्यकारों की आत्मकथाएं दोनों मिलती हैं। जैसे एक तरफ महात्मा गाँधी की 'सत्य के प्रयोग', डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की 'मेरी आत्मकथा', पंडित जवाहरलाल नेहरू की 'मेरी कहानी' हमारा ध्यान खींचती हैं तो दूसरी ओर यशपाल, 'वियोगी', ~~सुमन~~ बाबू गुलाबराय, आदि की आत्मकथा भी सभी को अपनी तरफ आकर्षित किये बिना नहीं रहती।

आत्मकथा लेखन में सबसे अहम बात यह है कि लेखक के पास इतना उन्मुक्त हृदय होना चाहिए, जो अपनी दुर्बलताओं को बिना संकोच स्वीकार कर सके तभी आत्मकथा लिखने का उद्देश्य पूरा होगा।